SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

गदर पार्टी में गदर क्रांतिकारियों के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध स्वतंत्रता की तैयारी : एक समीक्षात्मक अध्ययन

वीणा कुमारी, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
राँची वीमेंस कॉलेज, राँची, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

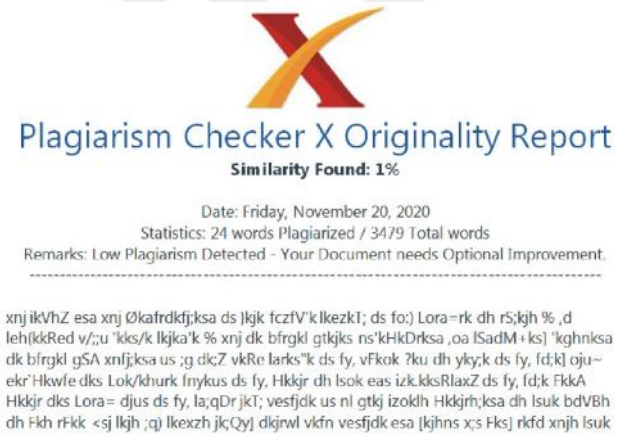

Corresponding Author
वीणा कुमारी, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
राँची वीमेंस कॉलेज,
राँची, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/11/2020
Revised on : -----
Accepted on : 27/11/2020
Plagiarism : 01% on 20/11/2020

शोध सार

गदर का इतिहास हजारो देशभक्तों एवं सैंकड़ो, शहीदों का इतिहास है। गदरियों ने यह कार्य आत्म संतोष के लिए अथवा धन की लालसा के लिए नहीं किया, वरन् मातृभूमि को स्वाधीनता दिलाने के लिए भारत की सेवा में प्राणोत्सर्ग के लिए किया था। भारत को स्वतंत्र करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने दस हजार प्रवासी भारतीयों की सेना इकटठी की थी तथा ढेर सारी युद्ध सामग्री रायफल, कारतूस आदि अमेरिका में खरीदे गये थे, ताकि गदरी सेना भारत में आकर अंग्रेजी सेना के विरूद्ध युद्ध करके भारत को आजादी दिला सके। निःसंदेह यह कहना सत्य होगा कि 1857 के पश्चात् भारत की स्वतंत्रता के लिए यह प्रथम प्रयत्न था। गदर आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी भारतीय द्वारा आयोजित एक विद्रोह था।

मुख्य शब्द

गदर विद्रोह, स्वाधीनता, प्रवासी भारतीय, अंग्रेजी सेना, अंतर्राष्ट्रीय स्तर।

गदर आंदोलन में गदरी क्रांतिकारियों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध निम्नलिखित गदरी तैयारी थी जो इस प्रकार थी :

1. ब्रिटिश शासन के विरूद्ध

गदर आंदोलन ब्रिटिश शासन के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी भारतीयों द्वारा आयोजित एक विद्रोह था। यह किसी एक व्यक्ति या समूह का प्रतिफल नहीं था वरन् भारत की 1904ई. की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का प्रतिफल था। मुख्यतः पंजाब की प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियाँ जिसके कारण जीविका के लिए कनाडा और अमरीका जाने की मजबूरी और उन

देशों में भारतीयों के प्रति नस्ली भेदभाव के कारण प्रवासी भारतीयों में स्वाधीनता को लेकर आयी जागृति का नतीजा था। गदर आंदोलन को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है।

2. भारतीय पंजाबी प्रवासियों का सफर

पंजाब में 1901–02 और 1905 में भयंकर अकाल पड़े थे। पहले अकाल में दो लाख गरीब मारे गये थे, दूसरे अकाल में यह संख्या पांच लाख से कम न थी। इस स्थिति में ब्रिटिश सरकार दोआब इलाके में सिंचाई की दर बढ़ाने पर अमादा थी। इस सवाल को लेकर दो आब के किसानों का प्रबल आंदोलन उठ खड़ा हुआ। यह आंदोलन किसी विद्रोह से कम न था। इस आंदोलन के सिलसिले में लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह, सूफी अम्बा प्रसाद और कई अन्य नेताओं को देश निकाला दे दिया गया था। अकाल के इन्हीं दिनों में पंजाब के हजारों युवक रोजी रोटी की तलाश में देश के बाहर चले गये। उन्होंने मलया, सिंगापुर, शंघाई, हांगकांग तथा तमाम दक्षिण पूर्वी एशिया में अपनी बस्तियाँ बना ली थी। इन्हीं दिनों अमेरिका और कनाड़ा में सिखों ने बड़ी–बड़ी बस्तियाँ बसा ली थी। अनुमान है कि यहाँ लगभग छब्बीस हजार सिख जा बसे थे। वे जंगल सफाई, खेत मजदूरी और धंधों में मजदूरी करके लगभग तीन सौ रूपये मासिक कमा लेते थे। भारतीयों के लिए उन दिनों यह बड़ी धन राशि थी। दूसरी ओर बंगाल के विद्यार्थीगण ज्ञान–विज्ञान की बड़ी लालसा से अमेरिका पहुँचने लगे थे। स्वामी विवेकानंद के शिकागो और अमेरिका में आध्यात्मिक यात्रा के बाद बंगाल के छात्र अपने–अपने घर–बार बेच कर भी उच्च शिक्षा के लिए अमरीका पहुँचे। इन छात्रों ने विद्या अध्ययन के अलावा राष्ट्रीयता के संदर्भ में भी जानकारी हालिस करना शुरू किया था।

इन दिनों बंगाल के क्रांतिकारियों में फौजी शिक्षा पाने और बम बनाने की कला सीखने की धुन समायी हुई थी। बंगाल के अनेक क्रांतिकारी दलों ने बम बनाना सीखने के लिए कनाड़ा, अमेरिका और यूरोप के अन्य देशों में जाना शुरू किया था। इन क्रांतिकारियों का एक उद्देश्य अमरीका और यूरोप के देशों से भारत की क्रांति के लिए अस्त्र–शस्त्र की व्यवस्था करना भी था। उन दिनों अमेरिका को संसार के सभी स्वतंत्रता संग्रामी देश अपना दुर्ग मान रहे थे। अनेक देशों के क्रांतिकारी वहाँ बसे हुए थे। भारतीय क्रांतिकारियों को दूसरे देशों के क्रांतिकारियों से वहाँ मिलने जुलने का अवसर मिला करता था। इस वातावरण ने प्रवासी सिखों के हृदय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ने के लिए उपजाऊ जमीन तैयार कर दी थी और धार्मिक संकुचित मनोवृत्ति से ऊपर उठा दिया था। जिन दिनों अमेरिका यें यह सब हो रहा था भारत के अनेक छात्र इंग्लैण्ड में डेरा जमाये बैठे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत के छात्रों को इंग्लैड बुला कर विज्ञान तथा अन्य विषयों की शिक्षा पाने के लिए विज्ञापन निकाल कर छात्रवृत्तियों की घोषणा की थी। इंग्लैण्ड में बन इंडिया हाउस इन छात्रों के इकट्ठा होने का केन्द्र बन गया था। 1908 ई. में वहाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857) की पचासवीं स्वर्ण जयंती मनायी गई थी। सावरकर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर अपने लिखे हुए पुस्तक का पाठ किया था। उसी दिन बहादुर शाह जफर की पंक्तियाँ गूंज उठी थी।

3. गदर आंदोलन की प्राथमिक तैयारी

गदर पार्टी के क्रांतिकारी सिपाहियों में लगन, त्याग और देश की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाने की अदम्य भावना की कोई कमी नहीं थी, कमी सिर्फ संगठन की थी। श्री रासबिहारी बोस के पंजाब में आकर गदर का नेतृत्व संभाल लेने से इस महान् क्रांतिकारी आन्दोलन का स्वरूप ही बदल गया। श्री बोस अपनी सूझ–बूझ के कारण अच्छे संगठनकर्त्ता के रूप में पहले ही विख्यात थे। अब उन्हें अमेरिका से आए पंजाब क्रांतिकारियों के साथ काम करने का एक नया क्षेत्र मिल गया।

गदर आन्दोलन में विद्यार्थियों को शामिल करने के लिए कई प्रयत्न किए गए, लुधियाना में कुछ सफलता भी मिली। श्री देवासिंह ने, जो लुधियाना में खेलों के सामान की दुकान करते थे, उन्होने कई विद्यार्थियों को क्रांतिकारी विचार भी दिए, उन विद्यार्थियों में सुच्चासिंह प्रमुख था। ये विद्यार्थी बम बनाने के लिए मसाला जुटाने, क्रांतिकारी साहित्य प्रकाशित करने, सन्देहवाहक का काम, सेनाओं में प्रचार आदि का काम सक्रिय रूप से करते रहे। इस्लामिया बोर्डिंग हाउस में सुच्चासिंह का कमरा क्रान्तिकारियों का केन्द्र बन गया।

विद्यार्थियों के अलावा गदरी क्रातिकारियों ने ग्रामीण जनता को अपने साथ मिलाने के लिए भी आन्दोलन किया। गदरी क्रांतिकारी खुलेतौर पर गाँवों में घूम–घूमकर गदर का प्रचार करते रहे। नवम्बर में पंजाब सरकार ने भारत सरकार को रिपोर्ट दी कि विदेशों से अभी–अभी लौटे आदमी गाँवों में घूम रहे हैं। नम्बरदारों ने स्थानीय अधिकारियों को ऐसे उदाहरण पेश किए हैं, जहाँ ये खतरनाक या भड़काने वाली बातें करते हैं।

4. गदरी का आक्रोश

ग्रामीण जनता को साथ मिलाने की इक्का–दुक्का कोशिशों के अलावा सबसे बड़ी कोशिश संत रणधीरसिंह द्वारा हुई। संत रणधीरसिंह और उनके श्रद्धालु धार्मिक विचार रखते थे। वे श्रद्धालु गदर पार्टी आन्दोलन में राजनीतिक नहीं, बल्कि धार्मिक प्रेरणा से शामिल हुए। गदरी क्रांतिकारी सभी विचारों के लोगों को गदर के लिए काम में लाना चाहते थे।

नई दिल्ली के रकाबगंज गुरूगंज गुरूद्वारे की घटना से सिखों में काफी क्षोभ फैल गया। गुरूद्वारे की बाहरी दीवार को अंग्रेजों के द्वारा ढहा देने से एक जबरदस्त आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। संत रणधीरसिंह उस आन्दोलन के प्राण थे, वह प्रारम्भ से ही भारत में अंग्रेजों को निकाल बाहर करने के पक्ष में थे। उन्होंने भगतसिंह को बताया था कि रकाबगंज को लेकर सिखों पर बड़ा भारी अन्याय हुआ है। उन्होंने भगतसिंह से यह भी कहा था कि, वह अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए लोगों को प्रेरणा दें और विदेशों से लौट रहे भारतीयों का इन्तजार किया जाए, उनके आने पर गदर कर दिया जाए।

संत रणधीरसिंह और भगतसिंह जगह–जगह भाषण करते रहे। गदरी क्रांतिकारियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का जिक्र सबके सामने चमकौर साहब की सभा में आया। संत रणधीरसिंह ने सभा में बताया कि एक कमेटी कायम की गई है, जिसने फैसला किया है कि अगर गुरूद्वारा रकाबगंज की दीवार को गिरा दिया गया तो शहीद होने के लिए तैयार रहा जाए। उन्होंने यह भी बताया कि, गदर पार्टी के दो आदमी होने वाले गदर के लिए आदमी लेने उनके पास आए थे। बंगाल से हथियार आ रहे थे। गदर पार्टी के आदमियों से सरहिन्द में मिलना तय हुआ।

फरवरी के आरम्भ में संत रणधीरसिंह ने गुजरवाल जिला लुधियाना में सौ के लगभग देशभक्तों की सभा की। 14 फरवरी को अखण्ड पाठ था। अखण्ड पाठ के बाद संत रणधीरसिंह ने मकान की छत पर एक गुप्त बैठक की, जिसमें उन्होंने बताया कि अब मैदान में कूद पड़ने का समय आ गया है, सेनाएँ विद्रोह के लिए तैयार हैं। चन्दा इकट्ठा किया गया और कहा गया कि गदर की तारीख की सूचना बाद में दी जाएगी।

जब गदर की निश्चित तारीख पर फिरोजपुर की पलटनों को साथ लेकर क्रान्तिकारियों की टोलियाँ फिरोजपुर में जमा हुईं तो संत रणधीरसिंह भी अपना एक जत्था लेकर वहाँ आए। योजना असफल हो गई, गिरफ्तारियाँ हुई, संत रणधीरसिंह और उनके साथियों को आजन्म कैद की सजा दी गई।

5. पंजाब के बाहर काम

गदर पार्टी के क्रांतिकारी आन्दोलन से सम्बन्धित काम पंजाब से बाहर बंगाली देशभक्तों ने किया। बनारस इस काम का केन्द्र बना। पंजाब के पहले दौरे से लौटते हुए श्री सान्याल ने मन–ही–मन फैसला कर लिया था कि अपने प्रान्त में अब छावनियों और सेनाओं में काम आरम्भ कर देने का समय आ गया है। श्री रासबिहारी बोस के साथ सलाह–मशविरे के बाद यह तय हुआ कि बंगाल की सेनाओं में पंजाब के गदर की खबर जल्दी पहुँचा देनी चाहिए। बंगाली क्रांतिकारियों ने अभी तक सेनाओं में विद्रोह का प्रचार–कार्य नहीं किया था।

श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'बन्दी जीवन' में लिखा था

''हम बहुत दिनों से यही समझते आ रहे थे कि अनपढ़ जनता को भड़काना कोई मुश्किल काम नहीं है। इसके साथ हम यह भी भली प्रकार समझते थे कि जनता को सिर्फ भड़का देने से हमें सफलता नहीं मिल सकती। इसलिए हमने इस काम की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था। हमारी धारणा था कि अगर पहले देश के पढ़े–लिखे नवयुवकों को संगठित कर लिया जाए, और फिर सेनाओं के सम्मुख अपना इरादा जाहिर करके उन्हें पूरी तरह सुदृढ़ बना

लिया जाए तो गदर की नींव पक्की हो जाएगी।''

श्री सान्याल ने बनारस में सैनिकों के बीच काम आरम्भ किया। उनके लिए सेनाओं में काम का यह अनुभव बिल्कुल नया था, इसलिए सैनिकों के साथ सम्पर्क स्थापित करने के हेतु वह फूँक–फूँककर कदम रखते रहे। पंजाब के गदरी क्रातिकारियों का सेनाओं के बीच निर्भीकता से किया जा रहा काम उन्हें प्रेरणा देता रहा है।

श्री सान्याल ने लिखा है कि गदर का काम बहुत छिप–छिपकर करना पड़ता था। किसी एक अनुभवी नेता का सबके सिर पर हाथ न होने के कारण कई छोटे–छोटे दल बन गए थे जो स्वतंत्र रूप से काम करते थे। बंगाल के अलावा पंजाब से बाहर यू.पी.के कई ठाकुरों के गाँवों में तथा राजपूताने के एक ठाकुर के साथ भी सम्बन्ध स्थापित किए गए। मुलतान छावनी में काम करने के लिए मनीलाल त्रिवेदी को नियुक्त किया गया। पर वह डर के मारे दिल्ली भाग गया। दिल्ली से श्री बालकृष्ण ने त्रिवेदी को राजपूताने के करवा कस्बे के रायसाहब ठाकुर गोपाल सिंह के पास भेज दिया। रायसाहब ने बताया कि वह तीन हजार आदमी ला सकते हैं, लेकिन उन्हें हथियारबन्द करने के लिए समय चाहिए था।

6. क्रान्तिकारी साहित्य

क्रान्तिकारी साहित्य में सबसे पहला नम्बर 'गदर' अखबार का था। अतिरिक्त 'गदर की गूँज', 'गदर सन्देश' कविताओं के संग्रह थे। क्रान्तिकारी भावनाओं से ओत–प्रोत ये कविताएँ क्रान्तिकारियों ने कंठस्थ कर ली थीं। गदर के शुरू होने पर बाँटने के लिए 'ऐलाने जंग' तैयार किया गया। भाई परमानन्द की पुस्तक 'तारीखे हिन्द' भी सरकारी नजरों में कांटा बन गई थी। भारत में क्रान्तिकारी साहित्य बाँटना भी गदर पार्टी के कार्यक्रम का एक अति आवश्यक अंग था। एक अंक में 'गदर' ने लिखा था :

''हमें लाखों की संख्या में 'गदर' अपने देश भेजना चाहिए। हम अखबार और किताबें छपवाकर भारत में भेजेंगे।''

इसमें कोई सन्देह नहीं कि गदरी क्रान्तिकारी भारत में अपना प्रेस लगाना चाहते थे। भारत लौटते समय रंगून में प्रेस लगाने का सुझाव रखा गया, ताकि 'गदर' को अंग्रेजी, उर्दू, गुरूमुखी और हिन्दी में छपवाकर सेनाओं, शहरों और गाँवों में बाँटा जाए। जैसे ही इसकी पाठक–संख्या बढ़ जाए और लोगों के दिल सरकार के विरूद्ध पलट जाए तो सारे भारत में विद्रोह करा दिया जाए। श्री रामबिहारी बोस का हैड–क्वार्टर अमृतसर से लाहौर में बदल देने का एक उद्देश्य यह भी था कि लाहौर में वह प्रेस लगाने का प्रबन्ध कर सकेंगे। लेकिन धन के अभाव के कारण प्रेस न लगाया जा सका। प्रेस की बजाय सिर्फ छः के करीब हाथ से छापने वाले डुप्लीकेटर खरीदे गए, जिससे गदर सन्देश और ऐलाने जंग' आदि गदरी साहित्य छापा गया। डुप्लीकेटर लेने से पहले लुधियाना के विद्यार्थी सुच्चासिंह और कृपालसिंह हाथ से 'गदर सन्देह' और 'गदर गूँज' लिखते रहे। हाथों द्वारा लिखा गया और डुप्लीकेटरों द्वारा छपा साहित्य दूर–दूर तक बाँटा गया।

7. हथियार–प्राप्ति के प्रयत्न

गदरी क्रान्तिकारियों ने हथियार जुटाने के विशेष प्रयत्न कनाडा तथा अमेरिका में, देश वापसी पर मार्ग में और भारत आकर बंगाली क्रान्तिकारियों द्वारा किए। ये सारी प्रयत्न विफल हो जाने पर पुलिस स्टेशनों और सरकारी चौकियों पर छापे मारे गए।

गदरी क्रान्तिकारियों ने सबसे पहले हथियार जुटाने के लिए बंगाल और सीमा प्रान्त की ओर ध्यान दिया– पर दोनों प्रान्तों में उन्हें सफलता नहीं मिली। हथियारों की ओर से निराश होकर बम बनाने की ओर ध्यान दिया गया। 31 दिसम्बर, 1914 को बहुत से क्रान्तिकारी अमृतसर की बिरयाली धर्मशाला में जमा हुए। डॉ. मथुरासिंह ने बताया कि उन्हें बम बनाने का नुस्खा आता है। एक पीतल की दवात मँगाई गई। डॉ. मथुरासिंह ने उसमें मसाला भर दिया। परमानन्द (यू.पी.), मूलसिंह आदि ने नहर के किनारे जाकर उसे चलाया और वापस आकर क्रान्तिकारियों को बताया कि बम सफल रहा। तत्पश्चात् गदरी क्राान्तिकारियों ने बम बनाने की ओर ध्यान देना आरम्भ किया।

लुधियाना के पास झाबेवाल गाँव में बम फैक्टरी कायम की गई। डॉ. मथुरासिंह और परमानन्द (यू.पी.) झाबेवाल में बम बनाने का काम करते थे। पर यह बात कई लोगों को पता चल जाने से वे वहाँ से चले गए। झाबेवाल से बम फैक्टरी उठाकर दाभा स्टेट के लोहरबदी गाँव में ले जाई गई। बम तैयार करने में अधिक हाथ बंगालियों का रहा। उन्हें बम बनाने का खूब अनुभव था। बंगाल से कुछ बम पंजाब में भी आए, जो बहुत दूर तक मार करने वाले थे। श्री पिंगले के पास से मेरठ छावनी में पकड़े गए दस बम एक रेजीमैण्ट को उड़ा देने के लिए काफी थे।

8. सेनाओं में काम

सबसे महत्वपूर्ण, सबसे खतरनाक कदम जो गदरी क्रान्तिकारियों ने उठाया वह था सेनाओं को गदर के लिए भड़काना और उनके दिल में अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध घृणा पैदा करना।

गदरी क्रान्तिकारियों के ये मुख्य नारे थे :

''... जाओ, फौजों को जगाओ! तलवार के धनी सोए क्यों पड़े हो?.... तुम गोरों के स्थान पर जाकर लड़ते हो... दूसरे देशों पर आक्रमण करते हो... तुम अपने देश को अपने चार्ज में क्यों नहीं ले लेते?

''... गदर पार्टी ने भारत को स्वतंत्र कराने की जिम्मेदारी उठाई है। तुम्हारे पास सिपाहियों की काफी बड़ी संख्या है, तुम्हारे भाई फौज में हैं। बहुत से रिजर्व और पेंशन सिपाही गाँवों में रहते हैं।''

''.... अगर तुम्हें सेना या पुलिस के आदमी मिलें, उनमें अपने उद्देश्य का प्रचार करो।''

''... ऐ फौज के सिपाहियों! क्या तुम्हारा भारतीयों से कोई सम्बन्ध नहीं? ... क्या तुमने अंग्रेजों के पराधीन बने रहने की सौगन्ध उठा रखी है? ... क्या तुम्हारी जिन्दगी का मूल्य सिर्फ नौ रूपये है? ..... तुम एक क्षण में अंग्रेजों का बीज नाश कर सकते हो.. ऐ बहादुरों, तुम कितनी देर गुलाम रहोगे? उठो, अपने–आपकों कुर्बान कर दो।''

अमेरिका से चलकर गदरी क्रान्तिकारियों का रास्ते में जहाँ भी पड़ाव पड़ा, वे फौजों में विद्रोह का प्रचार करते आए।

शंघाई

श्री लहनासिंह और सरदारसिंह को शंघाई की फौजों में विद्रोह के लिए नियुक्त किया गया।

हांगकांग

जब 'कोरिया' और 'मशीमा मारू' जहाज हांगकांग आए, तो गुरूद्वारे में आठ दिन लगातार बगावत का प्रचार होता रहा, जिनमें फौजी सिपाही भी शामिल होते रहे। खतरा इतना बढ़ गया कि छब्बीसवीं पलटन की लाइनों को बदलने के लिए अधिकारियों को मजबूर होने पड़ा। हांगकांग के सिख सिपाहियों ने सहायता का विश्वास दिलाया। पर वे गदर करने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि देशी अफसर पूरे तौर पर अंग्रेजों के स्वामिभक्त थे।

सिंगापुर

गदरी क्रांतिकारियों की प्रेरणा से सिंगापुर एक देशी पलटन के बाद में सिंगापुर का प्रसिद्ध गदर किया। इसका उल्लेख एक अलग अध्याय में किया गया है।

पीनांग

जब 'तोशा मारू' और 'मशीम' मारू' जहाज पीनांग से आए, तो उन्हें वहाँ कुछ दिन रोक लिया गया। क्रान्तिकारियों का ख्याल था कि भारत में गदर आरम्भ हो चुका है, इसलिए उन्होंने पीनांग में ही गदर करने का फैसला किया। कुछ क्रान्तिकारी फौजियों से मिले। उन्होंने बताया कि फौजी इसलिए सख्त नाराज हैं कि उन्हें कुछ जर्मन कैदियों के पहरे की ड्यूटी पर नहीं लगाया गया। वे साथ मिलने के लिए तैयार हैं। यह फैसला किया गया है कि अगर अगले दिन जहाज न चलने दिए जाएँ तो उनकी सहायता से पीनांग शहर को लूट लिया जाए, पर अगले दिन जहाज चल दिए।

रंगून

फौजियों को भड़काने की कोशिश की गई, पर एक सूबेदार के सख्ती के व्यवहार से सफलता न मिली। इसके अतिरिक्त भारत में फौजीं में काम करने की सरगर्मियाँ बढ़ा दी गई।

जालन्धर

जनवरी के अन्त में हिरदेराम को वहाँ की फौजों के इरादे का पता लगाने के लिए जालन्धर भेजा गया। उसने थोड़े दिनों के बाद वापस लौटकर बताया कि डोगरे तथा दूसरे सिपाही शामिल होने के लिए तैयार है।

जैकबाबाद, बुन्नू, कोहाट

श्री हीरासिंह 'चर्ड' ने जैकबाबाद की फौजों को भड़काने की कोशिश की और दिसम्बर में श्री प्यारासिंह सेनाओं में विद्रोह फैलाने के लिए कोहाट गए। इसके अलावा सरनामसिंह और संत गुलाबसिंह को बन्नू भेजा गया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी कि पैंतीसवीं सिख पलटन ने उस समय शामिल होने का वचन दिया है, जबकि उसका तबादला रावलपिण्डी हो जाएगा।

रावलपिण्डी, जेहलम और होतीमरदान

मूलासिंह ने श्री निधानसिंह को रावलपिण्डी भेजा। 8 या 9 फरवरी के करीब रावलपिण्डी से यह खबर आई कि जेहलम, रावलपिण्डी, होतीमरदान और पेशावर की सेनाएँ विद्रोह करने के लिए तैयार हैं। वे निश्चित तारीख की इंतजार कर रही हैं। 15 फरवरी को श्री निधानसिंह चुग्घा और डॉ. मथुरासिंह जेहलम, रावलपिण्डी और सीमाप्रान्त इसलिए भेजे गए कि फौजों को गदर की निश्चित तारीख 21 फरवरी के सम्बन्ध में सूचना दे सकें। 18 फरवरी को डॉ. मथुरासिंह और श्री हरनामसिंह बदल गई तारीख के बारे में बताने जेहलम गए और श्री परमानन्द (यू.पी.) को इसी उद्देश्य के लिए पेशावर भेजा गया।

कपूरथला

श्री जवन्दसिंह को कपूरथला में यह पता लगाने के लिए भेजा गया कि रिसाले के कितने आदमी गदर में शामिल होंगे। श्री रासबिहारी ने श्री पिंगले को 15 फरवरी के दिन मेरठ और अम्बाला की ओर भेजा। यू.पी. का अधिक काम लुधियाना के एक विद्यार्थी सुच्चासिंह से लिया गया।

मेरठ

2 फरवरी के करीब सुच्चासिंह और करतारसिंह सराबा मेरठ गए, जहाँ उन्हें श्री पिंगले भी आकर मिल गए। मेरठ में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई।

आगरा

4 फरवरी को वे तीनों मेरठ से आगरा आए। वहाँ कोई सिख पलटन न होने के कारण एक प्यादा पलटन की बारकों में गए। फौजी सिपाहियों ने पहले तो उत्साह दिखाया, पर बाद में डरकर अपने वचन से फिर गए।

इलाहाबाद

6 फरवरी को वे इलाहाबाद गए, जहाँ रिसाले और पैदल सेना दोनों से मिले रिसाले में सफलता नहीं मिली, पर पैदल फौज के एक हवलदार का सहयोग मिल गया।

बनारस

उसी दिन बनारस गए, दानापुर में तैनात एक सिख पलटन से मिलने की बात सोची गई। श्री करतारसिंह अपने एक बंगाली मित्र को लेकर छावनी में गए। वहाँ से अपने साथ एक राजपूत रेजीमैण्ट में प्रचार के लिए भेज दिया गया।

फैजाबाद और लखनऊ

बनारस से सुच्चासिंह को फैजाबाद भेजा गया। फैजाबाद में एक हवलदार सहयोग देने के लिए मान गया। फैजाबाद से होकर, सुच्चासिंह, श्री करतारसिंह और पिंगले से लखनऊ में आ मिले। श्री करतारसिंह लखनऊ में सोलहवें रिसाले की बैरकों में गए। पता चला कि रिसाला लड़ाई को जा चुका है। 10 फरवरी को सुच्चासिंह एक पैद रेजीमैण्ट के क्वार्टरगार्द में गया, पर वहाँ से निकाल दिया गया। 11 फरवरी को सुच्चासिंह ने श्री रासबिहारी बोस को आकर रिपोर्ट दी, तत्पश्चात् 15 फरवरी को अम्बाला छावनी में भेजा गया, जहाँ उसे एक फौज क्लर्क का सहयोग मिला।

मुस्लिम क्रान्तिकारियों की अहम भूमिका

श्री रासबिहारी बोस के पंजाब आने के बाद भी मीयाँमीर के तेईसवें रिसाले के साथ बाकायदा मेल–मिलाप जारी रखा गया। शंघाई से आए बलवन्तसिंह इसी अभिप्राय को लेकर तेईसवें रिसाले में भरती हुई थे। मूलासिंह स्वयं भी मीयाँमीर गया। उसने श्री रासबिहारी बोस के आगे एक सुझाव रखा कि मीयाँमीर की मुस्लिम पलटनों में काम करने के लिए मुसलमान क्रान्तिकारियों को भेजा जाए।

निष्कर्ष

गदर आंदोलन की तैयारी में ब्रिटिश साम्राज्य की नींद हराम कर दी थी, क्योंकि गदर पार्टी के क्रांतिकारी सिपाहियों में लगन, त्याग और देश की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाने की अदम्य भावना की कोई कमी नहीं थी। श्री रासबिहारी बोस के पंजाब में आकार गदर का नेतृत्व संभाल लेने से इस महान गदर क्रान्तिकारी आंदोलन का स्वरूप ही बदल गया। विद्यार्थियों ने ग्रामीण जनता को अपने साथ मिलाने के लिए भी आंदोलन किया। गदरी क्रांतिकारी खुलतौर पर गाँवों मे घूम–घूमकर गदर का प्रचार करते रहे। गदर पार्टी के क्रान्तिकारी आंदोलन से संबंधित काम पंजाब से बाहर बंगाली देशभक्तो ने भी किया।

अतः दूसरे आंदोलन की तुलना में गदर की विशेषता यह थी कि यह विदेशों में बसे भारतीयों का एक अनुपम प्रयास था, मानों जैसे भारत की मातृभूति पर अपने प्राणों जैसे अमूल्य वस्तु देकर स्वतंत्रता के इस महान यज्ञ को प्रचंड कर रहे थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत की आजादी की लड़ाई में गदर आंदोलन की भूमिका व इसकी उपलब्धि सराहनीय थी।

संदर्भ सूची

1. सिंह सरदार जगजीत, (1979), *गदर पार्टी का इतिहास*, नवयुग पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. जोश, सिंह सोहन, (1978), *हिन्दूस्तान गदर पार्टी, ए शार्ट हिस्ट्री*, भाग–2, पीपुल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.–284।
3. दत्त भूपेन्द्रनाथ, *अप्रकाशितो राजनीतिक इतिहास*, पृ.–6–7।
4. एमेली, सी. ब्राउन, (1975), हरदयाल हिन्दू रिवोल्यूसनरी एण्ड रेसन्लीस्ट, टस्कन, पृ.–179–180।
5. पंछी सिंह, प्रीतम, *गदर पार्टी का इतिहास*, पृ.–91।
6. संतोख, सिंह जगदेव, (1995), *सिख मार्टियर्स*, सिख मिशनरी रिसोर्स सेन्टर, इलैण्ड, पृ.–6।
7. सिंह भगत, (नवम्बर–दिसम्बर 1992), गदर (अखबार) गदर मेमोरियल सेन्टर 5 स्ट्रीट, सन फ्रांसिस्को सी. ए. 94117।
8. द गदर डायरेक्टरी, द डायरेक्टर्स इन्टेलिजन्स ब्यूरो भारत सरकार 1934, पृ.–5।
9. कर, जेम्स कैम्पवेल, पेलिटिकल ट्रबल इन इंडिया (1907–1917) चेप्टर नौ, कलकत्ता 1917 पृ.–132–135।

****